प्रायोजित कार्यक्रम

अकादेमी ने विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों के साथ सहयोगी व्यवस्था के तहत देश के विभिन्न भागों में निम्नलिखित कार्यकमों को प्रयोजित किया।

- उस्ताद बडे ग़ुलाम अली खॉ के शताब्दी आयोजन के लिए 2 अप्रैल 2002 को कमानी सभागार, नई दिल्ली में बडे ग़ुलाम अली खान यादगार सभा, नई दिल्ली को 30,000 रू0 का अनुदान दिया गया। पं0 ओंकार जयंती संगीत समारोह मनाने के लिए 24 जून 2002 को त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली में स्वर रंग, नई दिल्ली को 20,000 का अनुदान दिया गया।
- अकादेमी ने कानपुर में, जुलाई 2002 में केरल संगीत नाटक अकादेमी द्वारा आयोजित प्रस्तुति उन्मुख कार्यशाला में श्री के.डी. त्रिपाठी को संकाय सदस्य के रूप में प्रायोजित किया।
- अकादेमी ने एन सी जेड सी सी नेशनल थियेटर फेस्टिवल चंडीगढ के लिए 21 सितम्बर 2002 को क्षितिज, दिल्ली द्वारा प्रस्तुत तथा श्री विपिन कुमार द्वारा निर्देशित 'ययाती' नाटक को प्रायोजित किया।
- स्वरालय, पलाकक्ड द्वारा 24 से 26 जनवरी 2003 तक फोर्क मैदान, पलाक्कड में फोकलोर फेस्टिवल आयोजित करने के लिए 50,000 रू0 की अनुदान राशि प्रदान की गयी।

अन्तर - राज्य सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम

कई वर्षो से चलायी जा रही इस योजना के तहत, अकादेमी ने राज्य सरकारों द्वारा सक्रिय रूप से लागू किए जाने वाले कार्यक्रम की परिकल्पना की है। इसमें अकादेमी देश के विभिन्न राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के बीच चुने हुए कलाकारों एवं कलाकार समूहों के आदान-प्रदान का समन्वय करेगी तथा उसे सहायता भी देगी। प्रारंभ में, अकादेमी ने जाने-पहचाने रंगमंच समूहों को उत्तर पूर्व राज्यों असम, मेंघालय, नागालैंड , त्रिपुरा, मणिपुर एवं सिक्किम में भेजकर कार्यक्रम कराने का निश्चय किया है। ये भ्रमण वर्ष 2003-2004 में आयोजित होंगे।

भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम

द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम का कार्यान्वियन अकादेमी द्वारा संस्कृति विभाग द्वारा किए गए निर्णयों के अनुसार किया जाता है। इसमें प्रमुख रूप से सूचना और पुस्तकें, टेपों आदि का आदान प्रदान सम्मिलित है।

प्रकाशन

अकादेमी के प्रकाशन कार्यक्रम के अंतर्गत, जो वर्ष 1953 में अकादेमी की स्थापना के तुरंत बाद शुरू किया गया था, प्रदर्शनकारी कलाओं पर पुस्तकें तथा मोनोग्राफ, त्रैमासिक पत्रिका संगीत नाटक का प्रकाशन सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त संगीत, नृत्य और नाटक संबंधी प्रकाशनों के संवर्धन के लिए अकादेमी इनके लेखकों और प्रकाशकों को अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं को पुस्तकों और पत्रिकाओं के लिए अनुदान प्रदान करके सहायता करती है। अकादेमी के प्रकाशनों की सूची परिशिष्ट-4 पर दी गई है।

संगीत नाटक खंड 36, अंक 3 एव 4 और खंड 37, अंक 1 और 2 इन रिपोर्टावधि के दौरान प्रकाशित किए गए थे। संगीत नाटक अकादेमी समाचार बुलेटिन का प्रकाशन एक नई रूपरेखा में फिर से शुरू हो गया। वर्ष 2002 के अंक 1 से 4 तथा 2003 के अंक 5 (जनवरी - मार्च) का प्रकाशन हो चुका है।

निम्न प्रदर्शनकारी कला पत्रिकाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गयी थी -

बहुरूपी (25,000 रू.) **शूद्रक** (25,000 रू.) **नटरंग** (30,000 रू.) **नाटक बूद्रेती** (40,000 रू.) **सयक नाट्यपत्र** (22,000 रू.) **जर्नल ऑफ द इंडियन म्यूजिकोलॉजिकल सोसाइटी** (25,000 रू.) **श्रुति** (1,00,000 रू.) **मूकाभिनय** (10,000 रू.), **नर्त्तनम** (60,000 रू.)

इस अवधि के दौरान, निम्न व्यक्तियों/समूहों को पुस्तकों के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की गयी -कल्याण माला एवं नववराना - कीर्तानयगल के लिए राजामम्ल को 23,580 रू. एवं 19,130 रू.।

प्रलेखन

वर्ष 2002-03 की अवधि में, अकादेमी के अभिलेखागार में, 11,009 श्वेत श्याम एवं रंगीन फोटोग्राफ, 590 रंगीन स्लाइड, 122 घंटे 24 मिनट 30 सैकिण्ड की ऑडियो रिकार्डिंग एवं 358 घंटे 15 मिनट 38 सैकिण्ड की विडियो रिकार्डिंग को जोड़ा गया है।

मार्च 2003 तक अभिलेखागार में 1,58,267 श्वेत-श्याम तथा रंगीन फोटोग्राफ, 39,843 रंगीन स्लाइड 6679 घंटे 24 मिनट 30 सैकिण्ड की ऑडियो रिकार्डिंग तथा 4535 घंटे 15 मिनट 30 सैकिण्ड की विडियो रिकार्डिंग एवं करीब 1.44 लाख फीट की 16 एम एम वाली फिल्म सामग्री थी।

गत वर्षों में संगीत नाटक अकादेमी ने प्रदर्शनकारी कलाओं पर ऑडियो/वीडियो टेपों, फोटोग्राफ और फिल्मों का एक बड़ा अभिलेखागार तैयार किया गया है। वर्ष 1981 से इसमें वीडियो टेपों को भी शामिल किया गया है। संग्रहित सामग्री का प्रचार श्रव्य-दृश्य को सुनने एवं देखने की व्यवस्था, संगीत के ध्वन्यांकन एवं पुनरांकन और फिल्म प्रोजेक्शन द्वारा किया जाता है। प्रकाशनों, फिल्मों और दूरदर्शन के साथ-साथ भारत की प्रदर्शनकारी कलाओं के अनुसंधान कार्यों में अकादेमी के अभिलेखागार की सामग्री का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है।

इस वर्ष की गयी ऑडियो/वीडियो रिकार्डिंग की सूची परिशिष्ट-5 में दी गयी है।

संग्रहालय

वर्ष 1953 में अपने स्थापना काल से ही अकादेमी प्रदर्शनकारी कलाओं से संबंधित वस्तुओं और कलाकृतियों का संग्रह करती आ रही है। प्राथमिक रूप में, इस संग्रह के आधार पर वर्ष 1964 में जनता के लिए संगीत वाद्य-यंत्र की दीर्घा को रवीन्द्र भवन के भूतल पर खोला गया था। इसका उद्घाटन प्रख्यात वायलिन वादक येहूदी मेंनूहिन द्वारा किया गया था। अत्यधिक रूप से सामग्री के संग्रहण का कार्य वर्ष 1968 में दिल्ली में आयोजित संगीत वाद्य-यन्त्रों की मुख्य प्रदर्शनी के समय से ही प्रारंभ हुआ। संग्रहालय में अब लगभग 1600 कलाकृतियाँ हैं। इनमें से ही संगीत वाद्य-यंत्र, मुखौटे, पुतलियाँ, हेडगियर, पोशाकें और हस्तकृतियाँ जैसी सामग्री के अलावा कुछ संगीत वाद्य-यंत्र हैं, जो अन्य देशों से उपहार के रूप में प्राप्त हुए है। संग्रहालय अनुसंधानकर्त्ताओं, छात्रों, संगीत शास्त्रियों, संगीतज्ञों आदि की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

पुस्तकालय एवं श्रव्य -दृश्य लाइब्रेरी

पिछले कई वर्षों में अकादेमी के पुस्तकालय में प्रदर्शनकारी कलाओं पर पुस्तकों का एक विशिष्ट संग्रह किया गया है, इसमें से बहुत सी पुस्तकें ऐसी हैं, जो या तो दुर्लभ हैं या अप्राप्य हैं। विशेष रूप से प्रदर्शनकारी कलाओं के छात्रों और अनुसंधानकर्त्ताओं की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पुस्तकालय में देश-विदेश की लगभग 100 पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। पुस्तकालय में अब उपहार स्वरूप प्राप्त 679 पुस्तकों के अतिरिक्त कुल पुस्तकों की संख्या 22,302 है। श्रव्य/दृश्य लाइब्रेरी के संग्रह में अब 9722 डिस्क, अकादेमी के अभिलेखागार से प्राप्त 761 प्री-रिकार्डेड कैसेट, नृत्य, नाटक और संगीत के 92 वीडियो कैसेट, 1602 वाणिज्यिक ऑडियो कैसेट, 102 उपहार में प्राप्त ऑडियो कैसेट और भारतीय संगीत के 747 कम्पैक्ट डिस्क एवं 6 वीडियो कम्पैक्ट डिस्क शामिल है।

इसकी सदस्यता संख्या 774 हो गयी है और चरणबद्ध तरीके से लाईब्रेरी सेवाओं को आधुनिक बनाने के लिए कम्प्यूटर लगाया गया है।

हिन्दी का प्रगामी प्रयोग

अकादेमी की राजभाषा नीति के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है। राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित अंतरालों पर हुई।

अकादेमी के स्टाफ में हिन्दी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से अकादेमी ने 16 से 30 सितम्बर, 2002 तक 'हिन्दी पखवाड़ा' मनाया। स्टाफ के लिए हिन्दी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थीं। विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।

इस अवधि के दौरान स्टाफ सदस्यो को प्रशिक्षण देने के लिए पहली बार 18 सितम्बर से 20 सितम्बर 2002 तक तीन दिन की कार्यशाला आयोजित की गयी। संस्कृति विभाग में निदेशक एवं उपनिदेशक, राजभाषा ने इन तीन दिनां में व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य अकादेमी के स्टाफ सदस्यो को राजभाषा हिन्दी में कार्यालय के दैनिक काम-काज करने के लिए प्रोत्साहित करना था।

सांस्कृतिक संस्थाओं और व्यक्तियों को अनुदान

अकादेमी अपने स्थापना काल से ही संगीत, नृत्य और नाटक संस्थाओं और व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करती आ रही है। अनुदान समिति ने अपनी 21 और 22 अगस्त , 2002 की बैठक में 457 आवेदन इपत्रों पर विचार करके 65.94 लाख रूपए की राशि 341 सांस्कृतिक संस्थाओं को (परिशिष्ट-6) संस्वीकृत की। इसके अतिरिक्त 2.50 लाख रूपए की राशि 11 पुतुल दलों को (परिशिष्ट-7) प्रशिक्षण प्रस्तुतियों और तकनीकी उपकरणों की खरीद आदि के लिए संस्वीकृत की। अनुसंधान परियोजनाओं के लिए व्यक्तियों को अनुदान देना जारी रहा।

बजट तथा लेखा

अकादेमी को अपनी योजनागत और योजनेत्तर गतिविधियों पर होने वाले व्यय को पूरा करने के लिए भारत सरकार के संस्कृति विभाग से सहायता अनुदान प्राप्त होता है। अकादेमी का बजट योजनेत्तर 4.10 करोड़ और योजनागत 6.00 +1.7229 करोड़ (उत्तर-पूर्व क्षेत्र के लिए) था।

वार्षिक लेखाओं का समेकित विवरण, जिसमें प्राप्ति और अदायेगी लेखा, आय और व्यय लेखा और संगीत नाटक अकादेमी एवं इसकी घटक इकाइयों जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी, इम्फाल; कथक केंद्र, दिल्ली और रवींद्र रंगशाला, दिल्ली के 2002-2003 के तुलन-पत्र सम्मिलित है, (परिशिष्ट 10-20) में दिया गया है।

कथक केन्द्र, नई दिल्ली

संगीत नाटक अकादेमी की एक घटक इकाई कथक केंद्र देश की एक अग्रणी नृत्य-शिक्षण संस्था है। वर्ष 1964 में स्थापित इस संस्था में कथक नृत्य और उससे संबद्ध विषयों, जैसे गायन और पखावज के बहुत से पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। प्रारम्भिक पाठ्यक्रम इस प्रकार हैं : 7-16 आयु वर्ग के छात्रों के लिए नृत्य में (अंशकालिक) पाँच वर्षीय बुनियादी पाठ्यक्रम और 13-22 आयु वर्ग के छात्रों के लिए (अंशकालिक) तीन वर्षीय डिप्लोमा (पास) पाठ्यक्रम। नृत्य में उच्च पूर्णकालिक पाठ्यक्रम है। - 3 वर्षीय डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम (16-24आयु वर्ग के लिए) और 2 वर्षीय पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम (19-26 आयु वर्ग के लिए)। हिन्दुस्तानी गायन और पखावज वादन में तीन वर्षीय विशेष पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं। नृत्य शिक्षकों और केंद्र के उन छात्रों के लिए, जिन्होंने डिप्लोमा (आनर्स) या पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरे कर लिए हैं और कथक शिक्षण कार्य करना चाहते हैं, एक वर्ष का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम भी चलाया जाता है।

कथक केन्द्र में एक प्रस्तुति एकक भी है, जिसका उद्देश्य प्रयोगात्मक कार्य के माध्यम से कथक के रंगपटल और तकनीक को समृद्ध करना है केंद्र में जिन विभिन्न विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है, उनके लिए प्रतिष्ठित शिक्षकों की सेवाएँ उपलब्ध हैं। कथक केंद्र का प्रबंध संगीत नाटक अकादेमी के कार्यकारिणी मंडल में निहित है, जिसे कथक केंद्र के लिए सलाहकार समिति सहायता प्रदान करती है। सलाहकार समिति का अध्यक्ष संगीत नाटक अकादेमी का उपाध्यक्ष होता है।

शैक्षिक एकक

इस वर्ष के दौरान केंद्र नृत्य छात्रों के प्रशिक्षण के अपने मुख्य नियमित कार्य को निष्पादित करता रहा है। केन्द के विद्यार्थियो का अकादेमिक सत्र 16 जुलाई से शुरू होता है तथा 15 मई को समाप्त होता है। किसी भी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियो को जुलाई के प्रथम /द्वितीय सप्ताह में होने वाली प्रवेश परीक्षा देनी होती है।

नए प्रवेश

सत्र 2002-03 में केन्द में प्रवेश के लिए विज्ञापन दिल्ली एवं दिल्ली के बाहर के विभिन्न समाचार पत्रो में प्रकाशित हुए थे। केन्द्र के गुरूओं/शिक्षकों की प्रवेश समिति ने पूर्व प्रवेश परीक्षा/साक्षात्कार के लिए आवेदको के आवेदन पत्रों का चयन किया। विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा 6 जुलाई से 9 जुलाई 2002 तक केन्द में आयोजित की गयी।

शैक्षिक सत्र 16 जुलाई, 2002 से शुरू हुआ और विभिन्न पाठ्यक्रमों में 72 नए प्रशिक्षणार्थियों को निम्नानुसार प्रवेश दिया गया :-

पाठ्यक्रम	प्रवेश दिया गया
3 वर्षीय बुनियादी पाठ्यक्रम	24
3 वर्षीय डिप्लोमा (पास) पाठ्यक्रम	14
3 वर्षीय डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम	20
2 वर्षीय पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम	05
3 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम (केवल विदेशियों के लिए)	07
1 वर्षीय पखावज वादन पाठ्यक्रम	01
1 वर्षीय तबला वादन पाठ्यक्रम	01
जोड़	**72**

छात्रों की संख्या (2002-03)

शैक्षिक सत्र 2002-2003के शुरू में केंद्र ने 181 छात्रों (पुराने एवं नए) का नामांकन किया। प्रशिक्षण के विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों का ब्यौरा निम्न प्रकार है :

पाठ्यक्रम	छात्रों की संख्या
3 वर्षीय बुनियादी पाठ्यक्रम	51
2 वर्षीय डिप्लोमा (पास) पाठ्यक्रम	47
3 वर्षीय डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम	47
2 वर्षीय पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम	12
प्रारंभिक पाठ्यक्रम	09
3 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम (केवल विदेशियों के लिए)	13
1 वर्षीय पखावज वादन पाठ्यक्रम	01
1 वर्षीय तबला वादन पाठ्यक्रम	01
जोड़	**181**

वर्ष के दौरान 25 छात्र पाठ्यक्रम छोड़कर चले गए और 7 छात्र वार्षिक परीक्षा में नहीं बैठे। वर्ष 2002-2003 की वार्षिक परीक्षा में 149 विद्यार्थी शामिल हुए।

विदेशी विद्यार्थी

केंद्र भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के जरिए या अन्य संस्था के जरिए भारत के बाहर से छात्रों को प्रवेश देता रहा है। सत्र 2002-03 में पुराने एवं नए नामांकित विदेशी छात्र निम्न प्रकार हैं :

कजाकिस्तान	03
दक्षिण कोरिया	02
उजबेकिस्तान	03
इंडोनेशिया	01
फ्रांस	01
रूस	01
कुल	11

छात्रवृत्तियाँ

केन्द्र ने मेधावी विद्यार्थियों को 20 छात्रवृत्तियाँ प्रदान की। अकादमिक सत्र 2002-03 के दौरान डिप्लोमा (आनर्स) एवं पोस्ट डिप्लोमा के विद्यार्थियों को निम्नानुसार छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गयी थीं

शैक्षिक सत्र 2002-2003 के दौरान प्रत्येक 1000 रूपए मासिक की 15 छात्रवृत्तियाँ डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम के मेंधावी छात्रों को प्रदान की गई :

डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष	06
डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष	04
डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम तृतीय वर्ष	05
जोड़	**15**

केन्द्र ने पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम के मेंधावी छात्रों को प्रत्येक एक हजार पाँच सौ रूपए मासिक की 4 छात्रवृत्तियाँ प्रदान कीं :

पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष	03
पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष	01

नि:शुल्कता

बुनियादी पाठ्यक्रम के 4, डिप्लोमा (पास) पाठ्यक्रम के 4 तथा डिप्लोमा (ऑनर्स) पाठ्यक्रम के 3 विद्यार्थियो को निशुल्कता प्रदान की गयी।

मकान किराया सब्सिडी

23 अगस्त 2002 को हुई सलाहकार समिति की बैठक की अनुशंसा के अनुसार अकादमिक सत्र 2002-03 में 9 योग्य छात्रों को 16 जुलाई 2002 से 15 मई 2003 तक 1500/- प्रति माह की मकान किराया सब्सिडी दी गयी।

व्याख्यान शृंखला/विशेष कक्षाएँ

केन्द, अपने विद्यार्थियो के लाभ के लिए नृत्य/साहित्य क्षेत्र के विद्वानो को केन्द के पाठ्यक्रम के अनुसार विभिन्न सैद्धान्तिक विषयों पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करता है। इस व्याख्यान श्रृखंला का प्रारंभ नवम्बर 2002 से हुआ।

इस श्रृंखला के अन्तर्गत निम्नलिखित गुरूओं/विशेषज्ञों द्वारा विद्यार्थियो की कक्षा में सैद्धांतिक व्याख्यान दिए गए :

1. श्री मुन्ना शुक्ला (कथक केन्द्र), नई दिल्ली
2. श्री तीरथ राम आजाद, नई दिल्ली
3. श्री बृज बल्लभ मित्रा, मुम्बई (विशेष कक्षा)
4. श्री बी. एस. बद्रीनाथ राव, बंगलौर (मानव गति सलाहकार) - विशेष कक्षा
5. श्री पुरू दधीच ; खैरागढ. (एक सप्ताह की श्रृखंला)
6. सुश्री कविता ठाकुर, नई दिल्ली
7. श्रीमती उमा शर्मा, नई दिल्ली (विशेष कक्षा)

सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी भ्रमण 2002-2003

केन्द्र ने अपने सर्वश्रेष्ठ परीक्षा परिणाम देने वाले विद्यार्थियों का एक भ्रमण कार्यकम 9 से 13 दिसम्बर 2002 तक आयोजित किया जिसके तहत उन्हें उस्ताद अल्लाउद्दीन खान संगीत एकेडेमी, भोपाल; लय शाला ललित कला समिति, इन्दौर; कोशिश, इटारसी और सुखाणी संगीत आर्ट एंड पर्फार्मिंग आर्ट, होशंगाबाद ले जाया गया। इस भ्रमण कार्यक्रम के दौरान कथक प्रशिक्षक श्रीमती मालती श्याम के मार्गदर्शन में कई मंचीय प्रस्तुतियाँ की गयी। इन कार्यक्रमों में केन्द के निम्नलिखित विद्यार्थियो ने भाग लिया - शैलजा बिष्ट, शेफाली पवार, अर्चना सिंह, मानसी डबराल, पूजा ठाकुर एवं नम्रता पमनानी।

अर्द्ध वार्षिक परीक्षाएँ 2002-2003

23 से 27 दिसम्बर 2002 तक निम्नलिखित पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष की अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ। (अकादमिक सत्र 2002-03) आयोजित की गयी -

2	वर्षीय पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम	05
3	वर्षीय डिप्लोमा (ऑनर्स) पाठ्यक्रम (अन्य सह विषयों के साथ)	04

2	वर्षीय डिप्लोमा (पास) पाठ्यक्रम	30
3	वर्षीय बुनियादी पाठ्यक्रम	12
	परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या	58

वार्षिक परीक्षा 2002-2003 (1 से 14 मई, 2002)

शैक्षिक सत्र 2002-2003 की वार्षिक परीक्षाओं का संचालन 01 से 14 मई, 2002 तक किया गया था। विभिन्न नृत्य पाठ्यक्रमों और संबद्ध विषयों की परीक्षाओं का संचालन करने के लिए बाहर से परीक्षक आमंत्रित किए गए थे। परीक्षकों के नाम निम्नलिखित हैं : -

फाउंडेशन और डिप्लोमा (पास) कोर्स :

श्रीमती भारती गुप्ता, आगरा

श्रीमती प्रेरणा श्रीमाली, दिल्ली

श्री तीरथ राम आजाद, दिल्ली

डिप्लोमा (ऑनर्स) और पोस्ट डिप्लोमा कोर्स/डिप्लोमा कोर्स :

श्रीमती माया राव नटराजन, बंगलौर

श्रीमती मंजूश्री चटर्जी, दिल्ली

श्री पुरू दाधीच, खैरागढ़ (म. प्र.)

तबला/पखावज (सह विषय)

श्री भगवत उप्रेती, दिल्ली

श्री शीतला प्रसाद मिश्रा, लखनऊ

योग :

सुश्री निशा महाजन, दिल्ली

श्री महिन्दर श्रीवास्तव , दिल्ली

गायन : (सह विषय)

श्रीमती हेमा अज़ीज, दिल्ली

पंडित जगदीश मोहन, दिल्ली

प्रारम्भिक चरण (केन्द्र के गुरू)

1. श्री मुन्ना शुक्ला
2. श्रीमती उर्मिला नागर
3. श्री राजेन्द्र गंगानी
4. श्रीमती गीतांजलि लाल
5. श्री कृष्ण मोहन मिश्र
6. श्री जय किशन महाराज

पोस्ट डिप्लोमा एवं डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रमों के अंतिम वर्ष की परीक्षा के सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र, खैरागढ़ के श्री पुरू दधीच द्वारा तैयार किए गए थे। उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन भी इन्हीं के द्वारा किया गया था।

परीक्षा परिणाम 2003

वर्ष 2002-03 की वार्षिक परीक्षा में कुल 149 विद्यार्थी शामिल हुए थे। प्रशिक्षण के विभिन्न पाठ्यक्रमों में निम्नलिखित संख्या में विद्यार्थियों को उत्तीर्ण घोषित किया गया :

पाठ्यक्रम	विद्यार्थियों की संख्या		
	शामिल हुए	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
3 वर्षीय बुनियादी पाठ्यक्रम	40	37	03
3 वर्षीय डिप्लोमा (पास) पाठ्यक्रम	38	33	05
3 वर्षीय डिप्लोमा (आनर्स) पाठ्यक्रम	48	48	-
2 वर्षीय पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम	10	10	-
3 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम (केवल विदेशियों के लिए)	07	06	01
बुनियादी पाठ्यक्रम	06	05	01
कुल	**149**	**139**	**10**

मंच प्रस्तुति परीक्षा (2002-2003)

अकादमिक सत्र 2002-2003 की वार्षिक परीक्षा के एक अंग के रूप में, 6 से 9 मई 2002 तक नई दिल्ली स्थित त्रिवेणी कला संगम में मंच कला-प्रदर्शन परीक्षा ली गयी जिसमें विभिन्न पाठ्यक्रमों के अंतिम वर्ष के 16 विद्यार्थी सम्मिलित हुए थे।

इस समारोह में प्रस्तुत किए जाने वाले कार्यक्रम बाह्य परीक्षकों के पैनल के समक्ष डिप्लोमा (पास), डिप्लोमा (आनर्स) तथा पोस्ट-डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों की योग्यता का मूल्यांकन करने का एक तरीका होता है।

शैक्षणिक भ्रमण

केन्द्र ने एडवांस पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के लिए फरवरी 2003 में शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम की योजना बनायी थी जिसके तहत उन्हें जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य एकादेमी, इम्फाल जाना था। पर ऐसा इसीलिए संभव नहीं हो सका क्योंकि उक्त अवधि में जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य एकादेमी अपनी महोत्सव गतिविधियों के आयोजन में व्यस्त थी।

ग्रीष्मावकाश 2003

केन्द्र का शिक्षण संकाय ।6 मई से 30 जून 2003 तक ग्रीष्मावकाश के लिए बंद रहा।

दीक्षांत समारोह, 2003

कथक केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले एवं बुनियादी, डिप्लोमा (पास), डिप्लोमा (आनर्स) तथा पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को विगत दो वर्षो से दीक्षांत समारोह में प्रमाण-पत्र / डिप्लोमा प्रदान किए जाते रहे हैं।

इस वर्ष जाने-माने शिक्षाविद् एवं विद्वान डॉ. अरूण निगावेकर, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 3। अगस्त 2003 को कामानी सभागार में आयोजित किए गए एक औपचारिक समारोह में वर्ष 2002-2003 में केन्द्र से अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों (पोस्ट डिप्लोमा के पाँच, और डिप्लोमा आनर्स के ग्यारह) को डिप्लोमा प्रदान किए। इस अवसर पर कथक केन्द्र के अध्यक्ष श्री श्यामानन्द जालान भी उपस्थित थे। दीक्षांत समारोह के बाद केन्द्र के कुछ वरिष्ठ विद्यार्थियों ने एकल नृत्य कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए ।

कार्यक्रम अनुभाग

केन्द्र का उद्देश्य, कथक नृत्य के शैली को नवोन्मेषकारी एवं प्रोत्साहन देने वाली गतिविधियों द्वारा बढावा देना है। यहाँ एक रेपर्टरी कंपनी है जो कथक नृत्य के क्षेत्र में नवोन्मेषकारी एवं प्रयोगात्मक कार्यो का अनवरत रूप से करती आ रही है। रेपर्टरी का विंग, शास्त्रीय कथक शैली को देश एवं विदेश में बड़ी सं0 में दर्शकों के सामने प्रस्तुत करती है।

केन्द्र प्रतिवर्ष कुछ महोत्सवों का आयोजन, अपने नियमित कार्यक्रम के तहत करती है। वर्ष 2002-03 में निम्नलिखित महोत्सवों का आयोजन किया गया -

कथक केन्द्र उत्सव (5 एवं 6 सितम्बर, 2002)

कथक के महोत्सव 'कथक केन्द्र उत्सव' का आयोजन 5 एवं 6 सितम्बर 2002 को किया गया। इस महोत्सव में केन्द्र के गुरुओं एवं उनके शिष्यों ने अपनी नृत्य संरचनाओं की प्रस्तुति की। इस महोत्सव में केन्द्र के पूर्व विद्यार्थियों ने भी भाग लिया।

कार्यक्रम का विवरण निम्नलिखित है :

बृहस्पतिवार , 5 सितम्बर, 2002

युगल : प्रोतिती भट्टाचर्जी एवं संगीता चटर्जी

युगल : माउमाला नायक एवं हेमंत कलिता

एकल : गौरी दिवाकर

'तराना' : नृत्य रचनाकार : गुरू उर्मिलानागर

नृत्यांगनाएँ : पूजा अग्रवाल, अर्चना सिंह, शैलजा नलवाडे, पल्लवी शर्मा, नम्रता, अर्पिता

'पंचमुखी' : नृत्य रचनाकार : गुरू राजेन्द्र गंगानी

नृत्यकलाकार : हेमंत पवार, रोहित लाल, महेन्द्र परिहार, सदानन्द बिस्वास, मुल्ला अफसर, राहुल गंगानी

शुक्रवार, 6 सितम्बर, 2002

'अंगमुक्ति' : नृत्य रचनाकार : गुरू मुन्ना शुक्ला

नृत्यांगनाएँ : कविता ठाकुर, दीक्षा उप्रेती, दिव्या उप्रेती, नेही कौल, दीप्ति गुप्ता

'सहेली' : नृत्य रचनाकार : गुरू गीतांजलि लाल

नृत्यांगनाएँ : रश्मि उप्पल, स्वाति सिंहा

बयेरिया : नृत्य रचनाकार : गुरू उर्मिला नागर

नृत्यांगनाएँ : पूजा अग्रवाल, पल्लवी शर्मा, अर्चना सिंह, शैलजा नलवडे, अर्पिता

'गति' : नृत्य रचनाकार : गुरू कृष्ण मोहन मिश्रा

नृत्य कलाकार : हेमंत कलिता, शालिनी आनन्द, मानसी डबराल, मीनाक्षी आर्या, जया प्रियदर्शिनी, बिल्टू सरकार

एकल : अभय शंकर मिश्रा

'करमशाह' : नृत्य रचनाकार : गुरू जय किशन महाराज

नृत्य कलाकार : दीपक महाराज, राघव शाह, सुजाता लाहिरी, गौरी दिवाकर, पूजा अग्रवाल

कथक एकल उत्सव (25 - 27 अक्तूबर, 2002)

हर वर्ष अक्तूबर और नवम्बर माह में आयोजित किए जाने वाले कथक एकल उत्सव में कथक नृत्य की उभरती प्रतिभाओं द्वारा नृत्य प्रस्तुतियाँ की जाती हैं। इसका उद्देश्य युवा नृत्य कलाकारों सहित कथक शिक्षकों, वरिष्ठ कलाकारों द्वारा किए गए कार्यों को सामने लाना होता है।

इस वर्ष कथक केन्द्र ने यह उत्सव, कथक के बनारस घराने के शलाका पुरूष स्व. आचार्य सुखदेव महाराज की स्मृति में 25 से 27 अक्तूबर 2002 तक नई दिल्ली के कमानी सभागार में आयोजित किया।

इस अवसर पर कथक केन्द्र के कथक हॉल में 26 से 28 अक्तूबर 2002 तक आयोजित संगोष्ठी में गुरुओं एवं आमंत्रित विशेषज्ञों ने भी भाग लिया। डा. कपिला वात्सायन, डा. विद्या निवास मिश्र, श्री कमलेश दत्त त्रिपाठी, श्री अशोक वाजपेयी एवं श्री प्रयाग शुक्ल ने भिन्न भिन्न विषयों जैसे नृत्य, साहित्य एवं वर्तमान समाज पर अपने -2 विचार व्यक्त किए।

नृत्य एवं वेशभूषा, रूप सज्जा, प्रकाश एवं ध्वनि आदि विषयों पर एक कार्यशाला भी कथक केन्द्र के विद्यार्थियों के

लिए आयोजित की गयी। वेशभूषा के लिए श्रीमती शोभा दीपक सिंह, रूप -सज्जा के लिए श्री नरेश खरे, प्रकाश के लिए श्री गौतम भट्टाचार्य एवं ध्वनि के लिए श्री काजल घोष को कार्यशाला का संचालन करने के लिए आमंत्रित किया गया था।

श्रीमती सितारा देवी ने 28 अक्तूबर 2002 को केन्द्र के विद्यार्थियों, आमंत्रित अतिथियों, गुरुओं, प्रतिभागियों के साथ अन्तरंग बातचीत की। सुश्री प्रेरणा श्रीमाली इस आयोजन की समन्वयक थीं।

कार्यक्रम

शुक्रवार, 25 अक्तूबर

अल्पना वाजपेयी (भोपाल)

सौविक चक्रवर्ती (कोलकात्ता)

योगिनी गाँधी, (पुणे)

शनिवार, 26 अक्तूबर

मुक्ता जोशी (मुम्बई)

मधुकर आनन्द (देहरादून)

मनीषा अभय (पुणे)

सलोमी शाह (अहमदाबाद)

रविवार 27 अक्तूबर

शिला मेहता (मुम्बई)

संदीप के. महावीर (मुम्बई)

सितारा देवी एवं शिष्य (मुम्बई)

वर्ष 2002-2003 में कला-प्रस्तुति एवं अन्य गतिविधियाँ

17-24 अगस्त 2002: राजस्थान के सीकर में श्रीमती गीतांजली लाल ने केन्द्र की विद्यार्थी पूजा ठाकुर के साथ कार्यशाला का संचालन किया था। इस कार्यशाला का आयोजन, मोदी इंस्टीच्यूट ऑफ एजेकेशन एंड रिसर्च, लक्ष्मणगढ़ ने किया था।

26 सितम्बर 2002 : कथक केन्द्र ने अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन दिवस के अवसर पर नई दिल्ली स्थित अशोक होटल में गुरु गीतांजली लाल द्वारा नृत्यसंरचित समूह नृत्य की प्रस्तुति की।

28 सितम्बर 2002: कथक केन्द्र एवं जवाहर कला केन्द्र, जयपुर ने 28 सितम्बर, 2002 को एक कार्यक्रम का आयोजन किया। केन्द्र के विद्यार्थियों के एक समूह ने श्री राजेन्द्र गंगानी के निर्देशन में नृत्य प्रस्तुति की।

13 अक्तूबर 2002 : श्री जय किशन महाराज की नृत्य संरचना 'तालइ तत्कार' की प्रस्तुति कमानी सभागार में की गयी । इसमें भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित कथक के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

मैक्सिको भ्रमण

8 से 18 अक्तूबर 2002

मैक्सिको में 8 से 18 अक्तूबर 2002 तक आयोजित सरवेंटिनो इंटरनेशनल फेस्टिवल में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित कथक केन्द्र के विद्यार्थियों ने भाग लिया। श्री जयकिशन महाराज ने मैक्सिको में नृत्य रचनात्मक आइटम प्रस्तुत किए। कथक केन्द्र के पूर्व विद्यार्थियों दीपक महाराज, राघव साह, प्रवीण गंगानी, सुजाता लाहिरी, गौरी कुमारी एवं पूजा श्री वास्तव ने इस आयोजन में भाग लिया।

कथक महोत्सव, 2003

कथक केन्द्र द्वारा नई दिल्ली के कमानी सभागार में 10 से 14 जनवरी 2003 तक पाँच दिन के वार्षिक महोत्सव लच्छू महाराज कथक महोत्सव का आयोजन किया गया। देश एवं विदेश के 14 उभरते हुए नृत्य समूहों ने इस महोत्सव में नृत्य रचनात्मक कार्य प्रस्तुत किए। प्रत्येक दिन के कार्यक्रम का समापन जाने माने वरिष्ठ नृत्य कलाकार की एकल नृत्य प्रस्तुति से हुआ। केन्द्र के गुरूओं ने भी दो आइटम प्रस्तुत किए। 11 से 14 जनवरी तक प्रतिदिन प्रात: कालीन सत्र में नृत्य रचना पर संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादेमी के कांफ्रेंस हॉल में हुआ। प्रख्यात कथक नृत्य कलाकारों एवं अन्य शैली के नृत्य कलाकारों ने भी इस संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी के विषय थे - 'अंडरस्टैडिंग द आर्ट ऑफ लच्छू महाराज', कोरियोग्राफी इन सिनेमा विद् अ फोकस ऑन लच्छू महाराज कंट्रीब्यूशन 'द फॉन्टस ऑफ कोरियोग्रोफी इन द एंसिएंट ट्रेटाइजेस एव द सिंबॉयटिक रिलेशन बिटविन डांस एंड म्यूजिक इन कोरियोग्राफी'। अन्य नृत्य शैलियों का प्रतिनिधित्व करने वाले चार अतिथि नृत्य कलाकारों श्रीमती माधवी मुद्गल, पं.नरेन्द्र शर्मा, सुश्री लीला सैमसन एवं डा.इलियाना सिटारिस्टी को प्रयोगात्मक आधार पर कथक के विद्यार्थियों के साथ 11 से 14 जनवरी, 2003 को दोपहर बाद नृत्य रचनात्मक कार्य प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया था। सायं कालीन सत्र में यही कार्यक्रम मंच पर प्रस्तुत किया गया।

जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस एकेडमी, इम्फाल

जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस एकेडमी, इम्फाल
इम्फाल स्थित जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस एकेडमी (जे.एन .एम.डी.ए.) मणिपुरी नृत्य के शिक्षण एवं प्रशिक्षण का प्रमुख संस्थान है। सन् 1954 में स्थापित इस संस्थान में मणिपुरी नृत्य एवं संगीत के साथ -2 अन्य प्रदर्शन कलाओं जैसे लाइ हरोबा एवं थांग-टा में कई विस्तृत पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं।इन पाठ्यक्रमों की रूपरेखा महत्वाकांक्षी व्यावसायिक कलाकारों को प्रशिक्षण देने को ध्यान में रखकर तैयार की जाती है। संस्थान के स्टाफ में प्रख्यात शिक्षक है। इसमें नृत्य नाटक की बड़ी रेपर्टरी वाली एक प्रस्तुति इकाई है। एकेडमी का प्रबंधन संगीत नाटक अकादेमी के कार्यकारिणी मंडल के हाथ में है। इस मंडल का सहयोग मणिपुर के राज्यपाल की अध्यक्षता में गठित एक स्थानीय सलाहकार समिति करती है। यही सलाहकार समिति एकेडमी के कार्यक्रमों एवं योजनाओं का निर्माण करने तथा इसके स्तर को बनाए रखने के प्रति उत्तरदायी है। वर्ष 2002-03 की अवधि में आयोजित किए गए कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्ट निम्नलिखित है :

स्थापना दिवस

जे.एन .एम.डी.ए. का 48वाँ स्थापना दिवस 1 अप्रैल, 2002 को मनाया गया था। इस उपलक्ष्य में, अकादेमी के सभागार में हुए समारोह में मणिपुर के राज्यपाल श्री वेद मरवाह मुख्य अतिथि थे और समारोह की अध्यक्षता जे.एन .एम.डी.ए. के उपाध्यक्ष श्री रतन थियम ने की। वर्ष 2001 में स्वर्ण पदक प्राप्त चार कलाकारों ने मणिपुरी नृत्य और नटसंकीर्तन में एकल कला प्रदर्शन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर एकेडमी के विद्यार्थियों ने भी परम्परागत मणिपुरी नृत्य एवं संगीत के विभिन्न कार्यक्रम पेश किए।

नृत्य एवं संगीत उत्सव

एकाडेमी ने अपने खुले सभागार में 17 से 20 अप्रैल, 2002 तक नृत्य एवं संगीत के वार्षिक उत्सव का आयोजन किया। मणिपुर के राज्यपाल श्री वेद मरवाह ने उत्सव का उद्घाटन किया। प्रख्यात मणिपुरी विद्वान पद्मश्री आर.के. झलजीत सिंह ने समारोह की अध्यक्षता की। किरण सैगल (ओडिसी), गीतांजलि एवं अभिमन्यु लाल (कथक) प्रियदर्शिनी गोविन्द (भरतनाट्यम) और उत्तर कमलाबारी सत्र (सत्रिय) ने महोत्सव के अवसर पर अपने-2 कार्यक्रम प्रस्तुत किए। अन्य प्रस्तुतकर्त्ता थे - बारिपदा उड़ीसा के मयूरभंज छऊ नर्त्तक रशीद खान (हिंदुस्तानी गायन), रोनू मजूमदार (हिन्दुस्तानी वाद्य बाँसुरी) और राजस्थान के लंगा एवं मंगणियार संगीतकार श्रीमती आर.के. जयंतीसना देवी एवं श्रीमती ए. बीनाकुमारी देवी जैसे स्थानीय मणिपुरी कलाकारों ने एकल मणिपुरी नृत्य प्रस्तुत किए। अरीबा-पाला का नेतृत्व किया श्री गौरमणि सिंह ने और जानी मानी कलाकार चन्द्रजिनि देवी के नेतृत्व में महिला कलाकारों ने समूह प्रदर्शन प्रस्तुत किए। नागालैण्ड के चाकेसंग लोक गीतकारों ने भी महोत्सव में कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

युवा कलाकारों का उत्सव

एकेडमी के सभागार में 18 से 20 अप्रैल, 2002 तक युवा कलाकारों का तीन दिन का उत्सव आयोजित किया गया था। जे.एन .एम.डी.ए. के उपाध्यक्ष श्री रतन थियम ने उत्सव का उद्घाटन किया। इस अवसर पर जाने-माने गीतकार श्री जयंतीकुमार शर्मा ने उत्सव की अध्यक्षता की और नृत्य आलोचक डा.सुनील कोठारी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

उद्घाटन के दिन जे.एन .एम.डी.ए. के विद्यार्थियों ने प्रधान गुरू श्री एस. थानिल सिंह की नृत्य संरचना में 'गीत गोविन्द' से एक गीत रचना की प्रस्तुति की। मणिपुरी जागोई मारूप के एक कलाकार श्री बिग्यानेश्वर सिंह ने महोत्सव के दौरान मंगला चरण, दस अवतार और गौरंग नर्तन की प्रस्तुति की। श्री जी. लोकेन शर्मा ने मिताई पुंग पर एकल नृत्य प्रस्तुत किया। दूसरे दिन पर्फामिंग आर्टिस्ट सैन्टर की नृत्यांगना राजकुमारी मुक्तासना देवी ने 'गौरंग भाभी' की नृत्य प्रस्तुति की। पर्फामिंग आर्टिस्ट लेबोरेटरी की कुमारी ओ सुनीता देवी ने 'कृष्ण रूप' की प्रस्तुति की। श्री एल. ब्रजकुमार सिंह ने बाँसुरी वादन प्रस्तुत किया। गवर्मेंट डांस कॉलेज, श्री गोविन्द जी नर्तनालय की कुमारी एल प्रियलता देवी ने 'नोनीचोर','कृष्णा नर्तन' और 'उकांता' की प्रस्तुति की। जे.एन .एम.डी.ए. के भूतपूर्व विद्यार्थी 'ए राधामानवी ने 'कृष्ण रूप' की प्रस्तुति की। उत्सव के अंतिम दिन कुमारी एन. सुनीता देवी ने हिंदुस्तानी स्वर गायन प्रस्तुत किया।

लाइ-हराओबा महोत्सव, 2002

लार्ड इबूधोउ चौखड का सात दिन का लाई-हराओबा महोत्सव 13 से 19 मई 2002 तक आयोजित किया गया था। प्रख्यात गुरूओं, कलाकारों, कार्यालय के कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने इस उत्सव में भाग लिया। यह उत्सव अकादेमी की गतिविधियों का नियमित हिस्सा है।

प्रायोजित कार्यक्रम

अकादेमी के विद्यार्थियों ने अकादेमी के सभागार में कर्नाटक के राज्यपाल श्रीमती बी.एस. रमा देवी के सम्मान में 17 मई, 2002 को मार्शल आर्ट एवं 'वसंत रास' नामक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मणिपुर के राज्यपाल वेद मरवाह, मणिपुर के मुख्य मंत्री एवं मणिपुर कला एवं संस्कृति मंत्री भी उपस्थित थे।

एडिनबर्ग फ्रिंज महोत्सव, स्कॉटलैंड
24 जुलाई से 24 अगस्त, 2002

जे.एन.एम.डी.ए.के निदेशक श्री एल.जॉयचंद सिंह के नेतृत्व में 20 सदस्यीय कलाकार मंडली ने 24 जुलाई से 24 अगस्त 2002 तक स्कॉटलैंड में हुए एडिनबर्ग टट्टू एवं एडिनबर्ग फ्रिज फेस्टिवल में भाग लिया। कलामंडली ने ढोल, पुंगचोलम्, एवं मार्शल आर्ट्स, की प्रस्तुती की। कलामंडली ने डंडी एवं अबरदीन में भारतीय दर्शकों के सामने भी कला प्रस्तुत की। इस कलाऱ्यात्रा को भा.सां. सं.प. एवं पर्यटन विभाग, भारत सरकार ने प्रायोजित किया था।

वरिष्ठ विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षण

अकादेमी के तीन गुरुओं-श्रीमती एल.बीनो देवी, श्री पी. धनजीत सिंह एवं श्री के. थोइबा ने कलाक्षेत्र में वरिष्ठ विद्यार्थियों को मणिपुर के लोक नृत्यों की शिक्षा प्रदान की। यह कला यात्रा 11 अगस्त से 26 अगस्त, 2002 तक चली।

मेघदूत

एकेडेमी के कलाकारों ने उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर की पुनरीक्षण समिति के सदस्यों के सम्मान में 2 जुलाई 2002 को अपनी नवीनतम प्रस्तुति "मेघदूत" की कला-प्रस्तुति की।

देशभक्ति दिवस

एकेडमी के विद्यार्थियों ने 13 अगस्त 2002 को जे.एन.एम.डी.ए.सभागार में देशभक्ति दिवस (पैट्रीयट्स डे) मनाया। 5 सितम्बर 2002 को गुरु पूजा मनायी गयी जिसके तुंरत बाद रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

पारम्परिक मणिपुरी नृत्य एवं संगीत महोत्सव

1. भारत के राष्ट्रपति महामहिम डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की मणिपुर की पहली यात्रा के अवसर पर इनके सम्मान में अकादेमी के विद्यार्थियों ने 5 अक्तूबर 2002 को राजभवन में पारंपरिक मणिपुर संगीत एवं नृत्य प्रस्तुत किया।
2. प्रधान गुरू श्री एस. थानिल सिंह के नेतृत्व में 28 सदस्यीय दल एवं प्रस्तुति इकाई के प्रभारी श्री थ चौतोम्बी सिंह ने ओडिसी रिसर्च सेंटर द्वारा भुवनेश्वर में 1 से 5 दिसम्बर तक आयोजित 'कोणार्क महोत्सव' में भाग लिया। दल ने 4 दिसम्बर को पारंपरिक मणिपुरी नृत्य एवं संगीत का कार्यक्रम एवं 5 दिसम्बर 2002 को 'मेंघदूत' नामक नृत्य नाटिका प्रस्तुत किए।

मणिपुर उत्सव

एकेडमी के 43 सदस्यीय दल ने 17 जनवरी 2003 को स्वभूमि, कोलकाता में आयोजित किए गए मणिपुर उत्सव में 'नट-संकीर्तन' एवं 'महारास' की प्रस्तुति की। मणिपुर सरकार द्वारा कोलकाता के पूर्वी मंडल सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से आयोजित इस उत्सव का उद्‌घाटन, मणिपुर के राज्यपाल श्री वेद मरवाह एवं नागालैड के राज्यपाल श्री श्यामल दत्ता ने 15 जनवरी 2003 को किया। यह उत्सव 19 जनवरी 2003 तक कोलकाता के विभिन्न स्थानों पर मनाया जाता रहा ।

20 कलाकारों के एक अन्य समूह ने 17 जनवरी को स्वभूमि में तथा 19 जनवरी को गोर्की सदन, कोलकाता में नृत्य नाटिका 'वैनू परेंग' की प्रस्तुति की।

राजर्षि भाग्यचन्द्र, मुर्शीदाबाद, प0. बंगाल को श्रद्धांजलि

प. बंगाल के मुर्शीदाबाद में स्थित भगवान गोविंदजी का मंदिर मणिपुरी रासलीला के महान रचनाकार राजर्षि भाग्यचन्द्र से संबद्ध है। संत राजा राजर्षि भाग्यचन्द्र को श्रद्धांजलि देने के लिए एकेडमी के गुरुओं एवं कलाकारों ने 18 जनवरी 2003 को 'नट संकीर्तन' एवं 'महारास 'की प्रस्तुति की।

संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली की स्वर्ण जयंती

जे.एन.एम.डी.ए. के निदेशक श्री एल. जॉयचन्द्र सिंह के नेतृत्व में एकेडमी के 22 सदस्यीय दल ने नई दिल्ली के सिरि फोर्ट सभागार में 28 जनवरी 2003 को संगीत नाटक अकादेमी स्वर्ण जयंती के उद्‌घाटन समारोह में पुंग वादन एवं मोइबंग प्रस्तुत किया। अगले दिन, महोत्सव में इस दल ने पुंग चोलम प्रस्तुत किया।

नई नृत्य संरचनाओं का पाँचवा राष्ट्रीय उत्सव, नई दिल्ली

श्री एस. थानिल सिंह के नेतृत्व में 14 कलाकारों के दल ने 28 फरवरी से 2 मार्च 2003 तक नई दिल्ली के इंडिया हैबिटैट सेंटर में आयोजित 5 वें नई नृत्य संरचनाओं के

राष्ट्रीय उत्सव में भाग लिया। इस दल ने 1 मार्च को श्री एस. थानिल सिंह द्वारा निर्देशित कार्यक्रम 'लैचल' (पुष्पों का गुच्छ) प्रस्तुत किया। यह महोत्सव इम्प्रेसारियो इंडिया द्वारा आयोजित किया गया।

गुवाहाटी में वसंत रास श्री थ. चाओटोम्बी सिंह के नेतृत्व में 14 कलाकारों के दल ने 8 जनवरी 2003 को 'वसन्तरास' प्रस्तुत किया। यह कार्यक्रम श्रीमती मीनाक्षी चलिहा के मितई जागोई पर्फार्मिंग सेंटर द्वारा गुवाहाटी में आयोजित किया गया।

जे.एन.एम.डी.ए. नृत्य एवं संगीत महोत्सव 2003

एकेडमी ने अपने कॉम्प्लेक्स में 26 से 29 मार्च 2003 तक नृत्य एवं संगीत का चार दिवसीय महोत्सव आयोजित किया। मणिपुर के राज्यपाल एवं जे.एन.एम.डी.ए. के अध्यक्ष श्री वेद मारवाह ने जे.एन.एम.डी.ए.के उपाध्यक्ष श्री रतन थियम की उपस्थिति में महोत्सव का उद्घाटन किया। देश के विभिन्न भागों से कलाकारों को इस महोत्सव में आमंत्रित किया गया था। इस कार्यक्रम में मेघालय का नृत्य एवं संगीत ; बाउल संगीत, छऊ नृत्य, हिन्दुस्तानी गायन संगीत एवं संतूर वादन प्रस्तुत किए गए। इस महोत्सव में भाग लेने वाले कलाकारों एवं दलों में रंगनाथन विश्वरन एवं चित्रा विश्वेश्वरन (चेन्नई), रोहिणी भाटे (पुणे), दर्शना झावेरी (मुम्बई), सुमुद्रा डांस ग्रुप (केरल), शेरोन लौवन (नई दिल्ली) एवं सरकारी छऊ नृत्य केन्द्र (सरायकेला) शामिल थे।

जे.एन.एम.डी.ए. युवा नर्तक महोत्सव

एकेडमी ने अपने सभागार में 27 से 29 मार्च 2003 तक तीन दिवसीय युवा नर्तक महोत्सव आयोजित किया। महोत्सव का उद्घाटन डा.सुनील कोठारी एवं गुरु थानिल बाबू सिंह ने किया। मणिपुर के कुल 12 नर्तकों एवं संगीतकारों ने महोत्सव में भाग लिया। कलाकारों में एम. रंधोल्फ सिंह (तबला), गोशे मैटेई (खुनंग इशाइ), बी. रोसी देवी (नृत्य), एम शंगीता बाला (नृत्य) एवं वाई अनीता देवी (तबला) शामिल थे।

व्याख्यान - निदर्शन कार्यक्रम

श्रीमती चित्रा विश्वेश्वरन ने एकेडमी की प्रस्तुति इकाई के कलाकारों के साथ भरतनाट्यम पर तीन दिवसीय (30 से 31 मार्च एवं 1 अप्रैल 2003) व्याख्यान-निदर्शन कार्यक्रम का संचालन किया।

स्मृति में

अप्रैल 2002 से मार्च 2003 के दौरान अकादेमी के सम्मानित रत्नसदस्य और पुरस्कृत कलाकारों सहित प्रदर्शन कलाओं के अनेक कलाकारों का निधन हो गया। संगीत नाटक अकादेमी ने उन महान कलाकारों के निधन पर शोक प्रकट किया। संगीत नाटक अकादेमी इन कलाकारों को श्रद्धासुमन अर्पित करती है।

शांता गाँधी, 9 मई 2002 को प्रख्यात निर्देशक एवं रंगकर्मी शांता गाँधी का देहावसान हो गया। आपको भारतीय रंगमंच में निर्देशक के रूप में योगदान के लिए 2001 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।
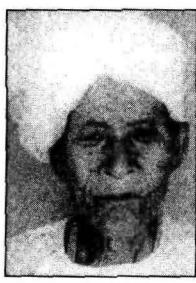
युमनम टोम्बी सिंह, उत्कृष्ट कोटि के पुंग वादक एवं मणिपुर के संकीर्तन कलाकारों में से एक युमनम टोम्बी सिंह का देहावसान 5 जून, 2002 को हो गया। आपको नट संकीर्तन में पुंग वादक के रूप में योगदान के लिए 1996 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

आर.एन.दौरेस्वामी, प्रख्यात् वीणा वादक का देहांत 17 अगस्त 2002 को हो गया। आपको कर्नाटक संगीत में बहुमूल्य योगदान करने के लिए सन् 2001 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।
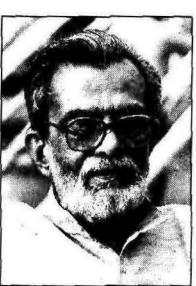
बी.वी. कारंत, प्रख्यात रंगमंच निर्देशक का देहांत 1 सिंतम्बर 2002 को हो गया। आपको सन् 1976 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था। आपको रंगमंच में बहुमूल्य योगदान करने के लिए सन् 2001 में अकादेमी की रत्न सदस्यता से विभूषित किया गया था।

के.वेंकलाक्षम्मा, प्रख्यात् भरतनाट्यम नृत्यांगना का देहांत 3 जुलाई, 2002 को हो गया। आपको भरतनाट्यम में बहुमूल्य योगदान के लिए सन 1964 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

दीना पाठक, भारतीय रंगमंच की प्रख्यात अभिनेत्री दीना पाठक का देहांत 8 अक्तूबर 2002 को हो गया। आपको सन् 1980 में रंगमंच के प्रति इनके योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

प्रतिमा बरूआ पांडे, असम की असाधारण लोक गायिका श्रीमती प्रतिमा बरूआ पांडे का देहांत 26 अक्तूबर 2002 को हो गया। लोक संगीत में योगदान के लिए आपको सन् 1988 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।
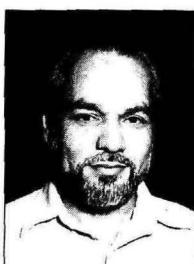
मनोहर सिंह, प्रख्यात अभिनेता श्री मनोहर सिंह का देहांत 14 नवम्बर 2002 को हो गया। आपको सन् 1982 में रंगमंच के प्रति योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

टी. के. महालिंगम पिल्लै, प्रख्यात भरतनाट्यम गुरू श्री टी.के. महालिंगम पिल्लै का देहांत 6 दिसम्बर 2002 को हो गया। आपको सन् 1985 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

चलकुडी एम. एस. नारायण स्वामी, जाने माने कर्नाटक वॉयलिन वादक का देहावसान मार्च 2003 में हो गया। आपको संगीत में योगदान के लिए सन् 1988 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

गोपाल छोट्रे, उड़िया भाषा के सुविख्यात् नाटककार का देहावसान मार्च 2003 में हो गया । आपको रंगमंच में योगदान के लिए सन् 1987 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

टी. विश्वनाथन, प्रख्यात बाँसुरी वादक का देहान्त 10 सितम्बर 2002 को हो गया। आपको कर्नाटक संगीत में बहुमूल्य योगदान करने के लिए सन् 1987 में संगीत नाटक अकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था।

संगीत नाटक अकादेमी फैलोशिप और सम्मान - 2002

अकादेमी फैलोस

शन्नो खुराना

कावालम नारायण पनिक्कर

अकादेमी सम्मान

सुशिलाराणी बाबूराव पटेल

शरयू कालेकर

सुरेश भास्कर गायतोंडे

अनिन्दो चटर्जी

टी.आर. सुब्रह्मण्यम्

ई. गायत्री

येल्ला वेंकटेश्वर राव

के.पी. उदयभानु

मालविका सरूक्कै

राजेन्द्र कुमार गंगानी

खुलेम ओंगबी लैपाकलोतपी देवी

किरण सैगल
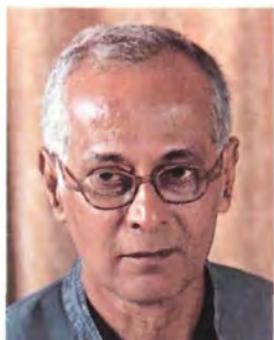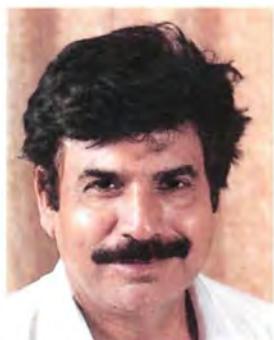
शम्भू भट्टाचार्य
अरुण मुखर्जी
सतीश आनन्द
निरंजन गोस्वामी
निसार अलाना
अशोक सागर भगत
दिलीप शर्मा
सुदक्षिणा शर्मा
चाओबल सिंह
सैंग्यूसैंग सैंग्यूबा पौंगेनेर
जागीर सिंह
एस. नटराजन
जे.एन. कौशल
रोमेश चन्दर
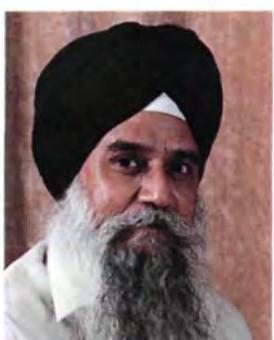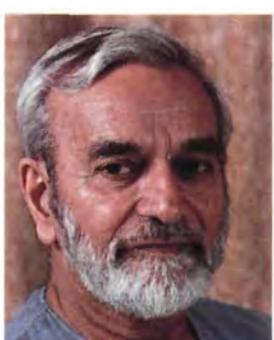
बाएं : असम के गवर्नर ले.जनरल एस.के. सिन्हा (सेवानिवृत) से अकादेमी की रत्नसदस्यता से सम्मानित होते हुए बी.बी. कारंत ।

मध्य चित्र में बाएं : वेम्पट्टि चिन्न सत्यम अकादेमी की रत्नसदस्यता प्राप्त करते हुए ।

मध्य चित्र में दाएं : अकादेमी के पुरस्कार समारोह में एम. बालमुरली कृष्ण ।

निचले चित्र में बाएं : कॉमिक खॉन्गरिम अपने समूह के साथ प्रदर्शन करते हुए ।

निचले चित्र में दाएं : उद्घाटन समारोह में भारत रत्न और अकादेमी के रत्न सदस्य उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ।

geet Natak Al
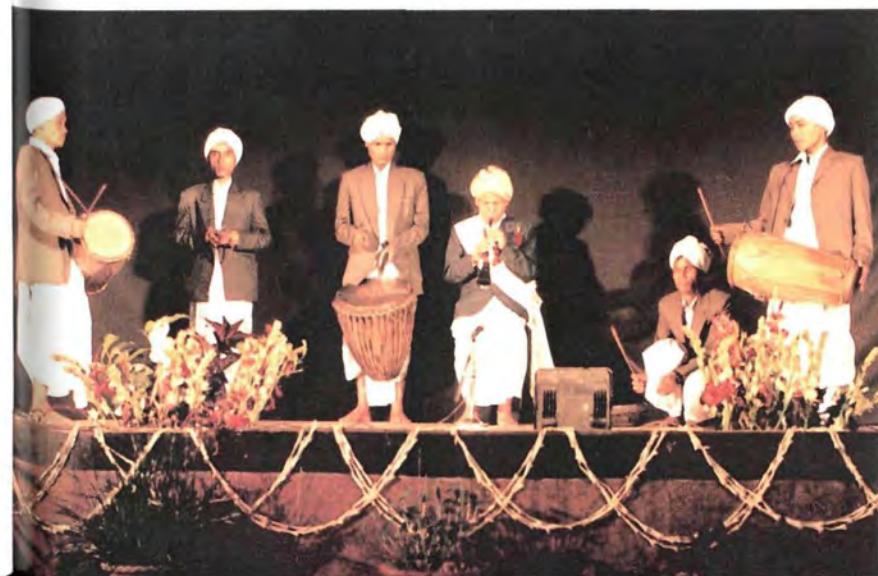
अकादेमी स्वर्ण जयन्ती समारोह, दिल्ली

दाएं : अकादेमी के अध्यक्ष डा. भूपेन हजारिका भारत के महामहिम राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को शॉल भेंट करते हुए ।

मध्य चित्र में बाएं : पंडित रवि शंकर एवं गुरू अम्मानूर माधव चाक्यार (चित्र में दाएं) भारत के राष्ट्रपति से शॉल एवं स्मृति चिन्ह प्राप्त करते हुए ।

निचले चित्र में : राजस्थान के लंगा एवं मगणियार समुदाय के बच्चों द्वारा प्रदर्शन
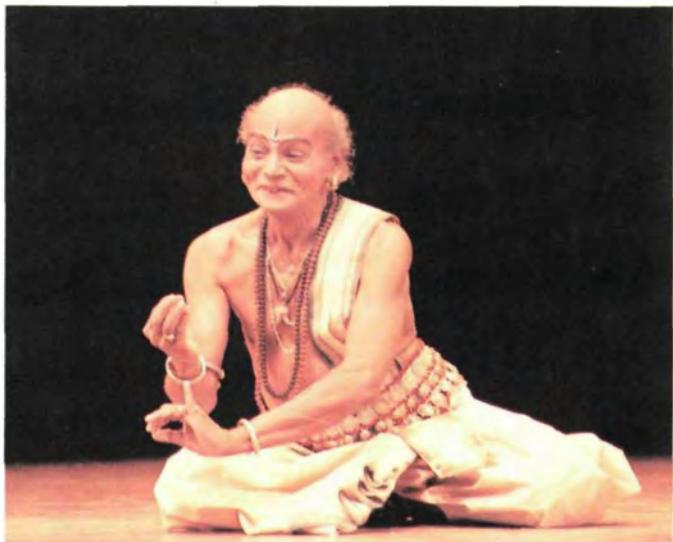
बाएं : गुरू केलूचरण महापात्र और (*निचले चित्र में*) अकादेमी के स्वर्ण जयन्ती समारोह में जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी के कलाकार प्रदर्शन करते हुए ।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति के साथ मंच पर अकादेमी के रत्न सदस्य दाएं से बाएं हैं : श्यामानन्द जालान (उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी), कोमल कोठारी, कपिला वात्स्यायन, वेदान्तम सत्यनाराण शर्मा, इब्राहिम अल्काजी, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, विनोद खन्ना, (राज्य मंत्री, पर्यटन एवं संस्कृति) डा. भूपेन हज़ारिका (अकादेमी के अध्यक्ष) डा.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, जगमोहन, (केन्द्रीय मंत्री, पर्यटन एवं संस्कृति) पंडित रवि शंकर, गुरू केलुचरण महापात्र, मृणालिनी विक्रम साराभाई, गुरू अम्मानूर माधव चाक्यार, बादल सरकार, बिरजू महाराज, बालमुरली कृष्ण, विजय तेंडूलकर, और जयन्त कस्तुआर (अकादेमी के सचिव)
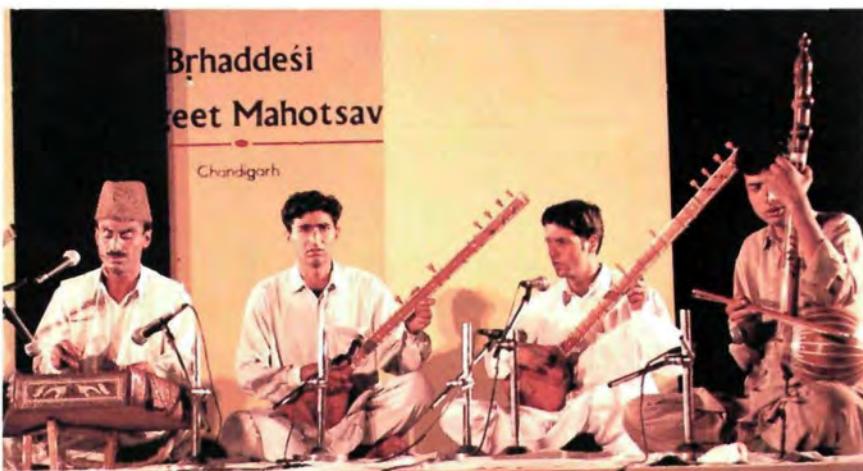
बृहद्देसी संगीत महोत्सव
क्षेत्रीय संगीत परम्परा पर गोष्ठी -- उत्तरी क्षेत्र, चंडीगढ़
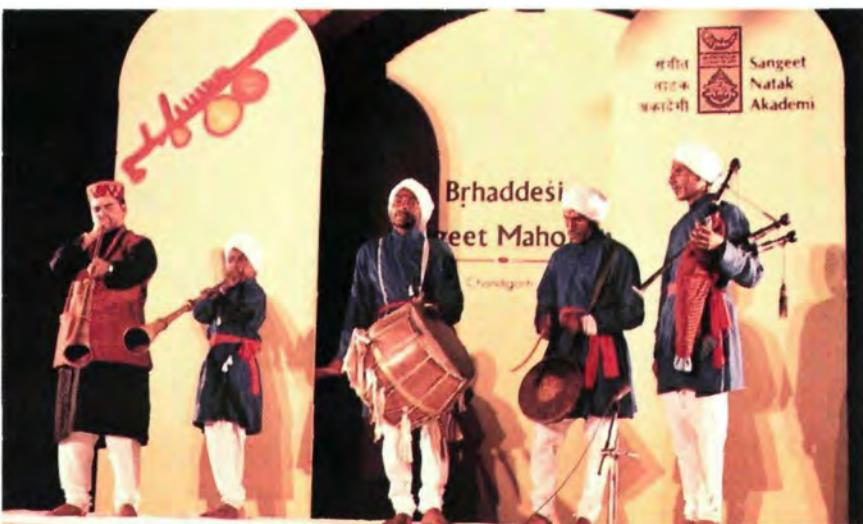
ऊपर चित्र में : झुसिया दमाई और उनके परिवार द्वारा उत्तरांचल के वीरगाथा गायन का प्रदर्शन

मध्य चित्र में बाएं : जम्मू एवं कश्मीर का सूफ़ियाना कलाम

निचले चित्र में : सोहन लाल और समूह द्वारा उत्तरांचल का ढोल वादन

ऊपर चित्र में : समारोह का उद्‌घाटन करते हुए गुरु केलुचरण महापात्र

निचले चित्र में वाएं : शरदी सैकिया

ऊपर: सी. सोम शेखर (निदेशक, कन्नड़ एवं सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, कर्नाटक सरकार) महोत्सव का उद्घाटन करते हुए, साथ हैं (*दाएं से बाएं*) जयन्त कस्तुआर, मृणालिनी साराभाई, रानी सतीश, संस्कृति मंत्री, कर्नाटक सरकार और साथ में हैं लीला रामानाथन। *निचले चित्र में बाएं*: अलरमेल वल्ली। *निचले चित्र में दाएं*: नविया नटराजन

दाएं : श्रीधर और अनुराधा । *निचले चित्र में बाएं* : लीला रामानाथन । *निचले चित्र में दाएं* : पद्मिनी रवि ।

राग दर्शन
कोलकाता

दाएं : रामाश्रय झा । *मध्य चित्र में :* गुलाम मुस्तफा खान । *निचले चित्र में बाएं :* टी . डी. जनोरिकर । *निचले चित्र में दाएं :* हफीज अहमद खान और दिनकर कैकिनी ।
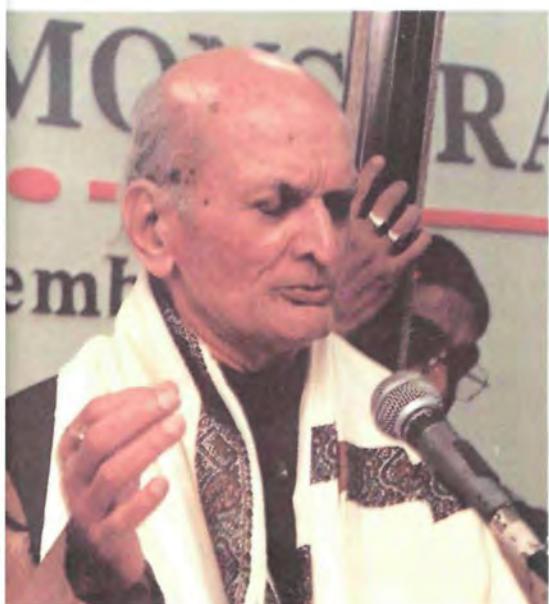
ऊपर चित्र में : रतन थियम द्वारा निर्देशित *ऋतुसंहारम* । *निचले चित्र में* : मोती लाल क्यमू द्वारा निर्देशित *अका नन्दन* ।
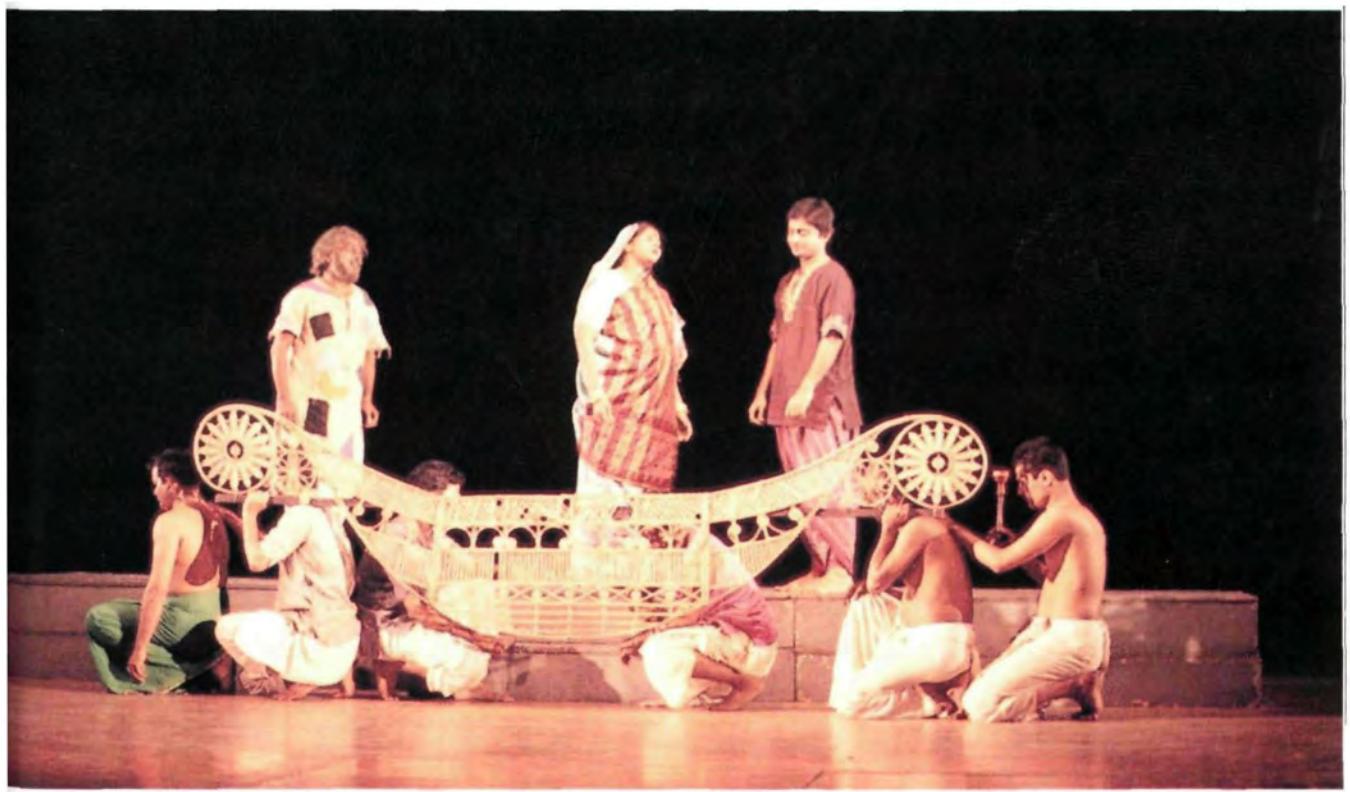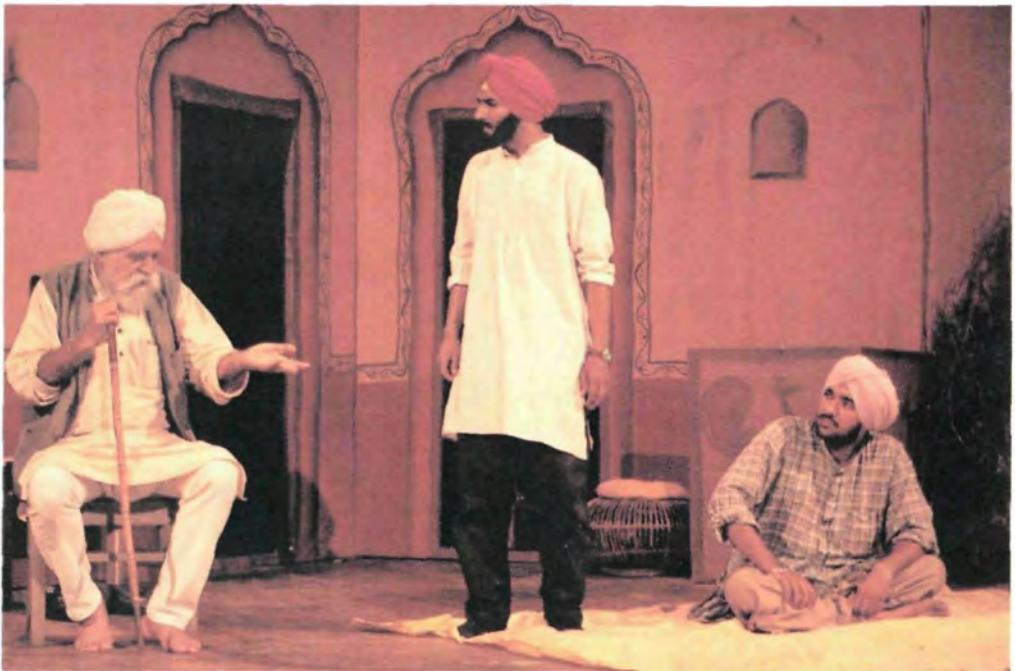
ऊपरी चित्र में : गुरशरण सिंह द्वारा निर्देशित नाटक *मुंशी खान दा* का एक दृश्य (वह स्वयं बाईं ओर एक भूमिका में हैं) ।
निचले चित्र में : बिभाष चक्रवर्ती द्वारा निर्देशित *माधव मलांची कैनिया* का एक दृश्य।

ऊपरी चित्र में : राजस्थान के पुतुल प्रदर्शक । *निचले चित्र में :* तोलू बोम्मलाट्टा, आन्ध्र के छाया पुतुल ।

वेणीर पुतुल, प. बंगाल का दस्ताना पुतुल

कर्नाटक का धागा पुतुल

ऊपरी चित्र में : भारतीय पुतुल प्रदर्शनी के उद्घाटन पर जयन्त कस्तुआर, सचिव संगीत नाटक अकादेमी, सभा को सम्बोधित करते हुए।
निचले चित्र में : पुतुल प्रदर्शनी के उद्घाटन के बाद यूनिमा अध्यक्ष मारग्रेट निकलस्यू कपिला वात्स्यायन के साथ।

ऊपरी चित्र में : पुतुल यात्रा गोष्ठी में कोमल कोठारी, कपिला वात्स्यायन, सुरेश दत्ता एवं ब्रैडफोर्ड क्लार्क अपने विचार प्रस्तुत करते हुए।
निचले चित्र में : हिन्दी सप्ताह के पुरस्कार वितरण के अवसर पर अकादेमी के सचिव एवं स्टाफ के सदस्य।
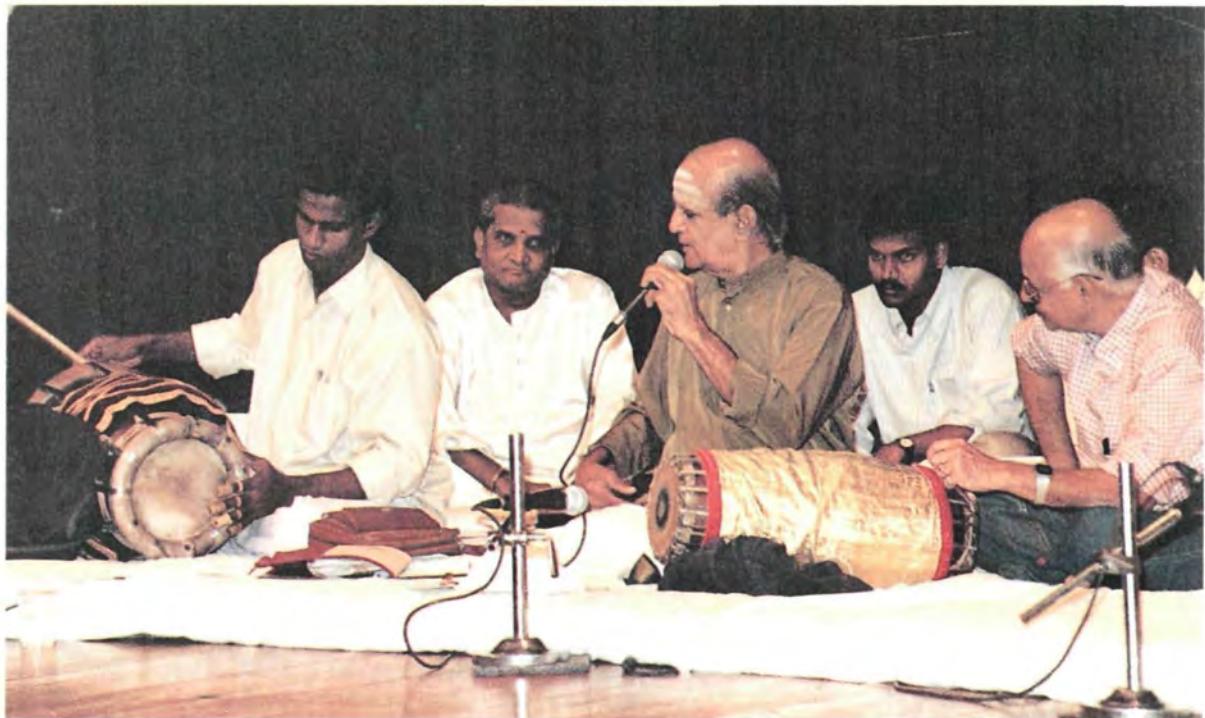
ऊपरी चित्र में : गोपाल कृष्ण विचित्र वीणा वादन करते हुए। *निचले चित्र में* : उमयालपुरम के शिवरामन (माईक पर) अपने मृदंगम प्रदर्शन के दौरान कुछ व्याख्या करते हुए।

ऊपरी चित्र में : सारंगी बजाते हुए राम नारायण । *निचले चित्र में* : रूद्र वीणा का वादन करते हुए उस्ताद असद अली खान ।

ऊपरी चित्र में : कथक महोत्सव के अवसर पर कथक केन्द्र के छात्रों द्वारा प्रदर्शन । *निचले चित्र में* : `होली में कथक के रंग` — वृन्दावन में रास गुरूओं के समक्ष रास कलाका
प्रदर्शन करते हुए ।

जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी
इम्फाल

जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी, मणिपुर के स्थापना दिवस के अवसर पर नृत्य प्रदर्शन ।

ऊपरी चित्र में : जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी, के नृत्य उत्सव 2003 का उद्घाटन करते हुए वेद मारवाह, मणिपुर के गवर्नर ।
निचले चित्र में : जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर कबुई नृत्य का प्रदर्शन ।

संगीत नाटक अकादेमीः संगम ज्ञापन (उद्धरण)

जिन उद्देश्यों के लिए सोसाइटी की स्थापना की गई है, वे इस प्रकार हैं : -

1. प्रादेशिक या राज्य की संगीत, नृत्य तथा नाटक अकादेमियों के कार्यकलापों का समन्वय करना;
2. भारतीय संगीत, नृत्य तथा नाटक के क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देना तथा इस प्रयोजन के लिए पुस्तकालय एवं संग्रहालय आदि की स्थापना करना;
3. अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तथा समग्र रूप से भारतीय संस्कृति के संवर्धन के लिए ऐसी ही अकादेमियों और अन्य संस्थाओं और संघों के साथ सहयोग करना;
4. संगीत, नृत्य तथा नाट्य कलाओं के संबंध में विभिन्न प्रदेशों के बीच वैचारिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना तथा तकनीकों का संवर्धन करना;
5. प्रादेशिक भाषाओं के आधार पर नाट्य केंद्रों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करना;
6. नाट्य प्रस्तुति, मंच-शिल्प के अध्ययन एवं अभिनय प्रशिक्षण सहित नाट्य-कला में प्रशिक्षण देने वाली संस्थाओं की स्थापना को प्रोत्साहित करना;
7. पुरस्कार और सम्मान प्रदान करके नए नाटकों की प्रस्तुति को प्रोत्साहन और सहयोग देना;
8. संदर्भ ग्रंथों-यथा सचित्र शब्द-कोश या पारिभाषिक शब्दावली पुस्तिका सहित भारतीय संगीत, नृत्य एवं नाटक संबंधी साहित्य को प्रकाशित करना;
9. श्रेष्ठ नाट्य संस्थाओं को मान्यता प्रदान करना या उन्हें अन्यथा सहायता प्रदान करना;
10. विभिन्न नाट्य शैलियों के अव्यावसायिक दलों की गतिविधियों, बाल रंगमंच, खुले रंगमंच तथा ग्रामीण रंगमंच के विभिन्न रूपों के विकास को प्रोत्साहित करना;
11. देश के विभिन्न क्षेत्रों में लोक संगीत, लोक नृत्य और लोक नाट्य को पुनर्जीवित करना तथा उनका परिरक्षण करना और सामुदायिक संगीत, तथा अन्य प्रकार के संगीत के विकास को बढ़ावा देना;
12. अखिल भारतीय आधार पर संगीत, नृत्य और नाट्य उत्सवों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों को प्रायोजित करना तथा ऐसे क्षेत्रीय उत्सवों को प्रोत्साहित करना;
13. संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए व्यष्टिक कलाकारों को पुरस्कार तथा सम्मान प्रदान करना तथा मान्यता प्रदान करना;
14. संगीत, नृत्य और नाटक के शिक्षण में समुचित एवं यथेष्ठ स्तर को बनाए रखने के लिए उपयुक्त कदम उठाना और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपर्युक्त विषयों के शिक्षण में अनुसंधान की व्यवस्था करना; और
15. संगीत, नृत्य एवं नाटक के क्षेत्रों में देश के विभिन्न प्रदेशों की बीच तथा अन्य देशों के साथ भी सांस्कृतिक संपर्क बढ़ाना।

संगीत नाटक अकादेमी की महापरिषद्, कार्यकारिणी मंडल तथा समितियाँ

कार्यकारिणी मंडल
डॉ. भूपेन हजारिका
अध्यक्ष

श्री श्यामानंद जालान
उपाध्यक्ष

श्री वी. सुब्रह्मणियन
वित्तीय सलाहकार

श्री के. जयकुमार
संयुक्त सचिव (संस्कृति)

श्रीमती सोनल मानसिंह
श्री अनुपम खेर
डॉ. (श्रीमती) हेलेन गिरि
डॉ. (श्रीमती) सरयु कालेकर
डॉ. (श्रीमती) शन्नो खुराना
श्रीमती प्रतिभा प्रह्लाद
श्री दुलाल राय
डॉ. एस. राजाराम
श्रीमती शांता सर्बजीत सिंह
श्री. बी. पी. सिंह
श्री बलवंत ठाकुर
श्री रतन थियम
श्रीमती चित्रा विश्वेश्वरण
श्री जे. पी. कस्तुआर
सचिव, संगीत नाटक अकादेमी (पदेन)

महापरिषद
डॉ. भूपेन हजारिका
अध्यक्ष

श्री श्यामानंद जालान
उपाध्यक्ष

श्री वी. सुब्रह्मणियम
वित्त सलाहकार

भारत सरकार के पाँच नामितिः
श्रीमती सोनल मानसिंह
डॉ. (श्रीमती) सरयु कालेकर
श्रीमती प्रतिभा प्रह्लाद
श्रीमती चांदना खान, आई.ए.एस.

*भारत के संविधान में वर्णित राज्य **और संघ राज्य** क्षेत्रों के प्रत्येक का एक प्रतिनिधि*
अंडमान और निकोबार
श्री एन. दास
आंध्र प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश
नामांकन की प्रतीक्षा है।

असम
श्री हिमांगशु शेखर दास

बिहार
डॉ. (श्रीमती) मुकुल बंधोपाध्याय

चंडीगढ़ प्रशासन
श्री जी. एस. चन्नी

दिल्ली
श्री शेखर वैष्णवी

दादर व नागर हवेली-संघ **राज्य** क्षेत्र
नामांकन की प्रतीक्षा है।

गोवा
श्री प्रसाद आर. सवकार

गुजरात
श्री वी. एन. मायरा

हरियाणा
श्री कमल तिवारी

हिमाचल प्रदेश
श्री एम. आर. कमल **हमीरपुरी**

जम्मू एवं कश्मीर
श्री बलवंत ठाकुर

कर्नाटक
श्री ए. आर. चंद्रहास गुप्ता

केरल
नामांकन की प्रतीक्षा है

लक्षद्वीप-संघ राज्य क्षेत्र
नामांकन की प्रतीक्षा है।

मध्य प्रदेश
श्री डी. के. सामन्त्रेय

महाराष्ट्र
सुश्री कीर्ति जयराम शिलेदर

मणिपुर
डॉ. श्रीमती सरोजिनी देवी

मेघालय
कमिश्नर एवं सचिव
मेघालय सरकार

मिजोरम
श्रीमती बोइचिंगपुई

नागालैंड
नामांकन की प्रतीक्षा है।

उड़ीसा
श्री गंगाधर सिंह

पांडिचेरी
थिरू के. राजामणिकम्

पंजाब
श्री आई. एस. ढिल्लों

राजस्थान
श्री अरविन्द मायाराम

सिक्किम
श्री एच. आर. कारकी

तमिलनाडु
थिरू पी. ए. रमैया

त्रिपुरा
श्री हीरालाल सेनगुप्ता

उत्तर प्रदेश
श्री राहुल भटनागर

पश्चिमी बंगाल
श्री अशोक मुखोपाध्याय

संस्कृति विभाग का प्रतिनिधि
श्री के. जयकुमार

सूचना और प्रसारण मंत्रालय का प्रतिनिधि
श्री प्रेम मटियानी

साहित्य अकादेमी के दो प्रतिनिधि
प्रो. के. सच्चिदानंद
श्री पु. लालथंगफाला सेलों

ललित कला अकादमी के दो प्रतिनिधि
श्री एम. एस. नंजुदा राव
प्रो. सी एस. मेहता

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् का एक प्रतिनिधि
श्रीमती सूर्यकान्ति त्रिपाठी

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का एक प्रतिनिधि
श्री अनुपम खेर

नियम 4(VIII) के अधीन सहयोजित बारह सदस्य
डॉ. (श्रीमती) शन्नो खुराना
उस्ताद असद अली खान
श्री टी. एन. कृष्णन
श्रीमती चित्रा विश्वेश्वरण
श्री आस्ताद देबू
श्रीमती दर्शना झावेरी
श्री रतन थियम
श्री दुलाल रॉय
श्रीमती अमाल अल्लाना
डॉ. चंद्रशेखर कंबार
डॉ. एस. राजाराम
सुश्री कविता कृष्णामूर्ति

नियम 4(IX) के अधीन सहयोजित आठ सदस्य
श्री बी. पी. सिंह
डॉ. (श्रीमती) हेलेन गिरि
श्रीमती शांता सर्बजीत सिंह
श्री दादी पद्‌मजी
डॉ. सुनील कोठारी
श्री गंगाधर प्रधान
श्री जतिन गोस्वामी

अनुदान समिति
डॉ. भूपेन हज़ारिका
अध्यक्ष
श्री श्यामानंद जालान
उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी
श्रीमती शांता सर्बजीत सिंह
श्रीमती चित्रा विश्वेश्वरण
डॉ. (श्रीमती) सरयु कालेकर
डॉ. (श्रीमती) हेलेन गिरि
श्रीमती प्रतिभा प्रहलाद
श्री दुलाल राय
श्री जयंत कस्तुआर,
सचिव, संगीत नाटक अकादेमी (पदेन सदस्य)

प्रकाशन समिति
श्री श्यामानंद जालान
उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी
डॉ. सुमति मुटाटकर
श्रीमती शांता सर्बजीत सिंह
श्रीमती प्रतिभा प्रहलाद
श्रीमती सोनल मानसिंह
डॉ. अनंत लाल
श्री के. डी. त्रिपाठी
श्री जयंत कस्तुआर
सचिव, संगीत नाटक अकादेमी (पदेन)

संगीत की सलाहकार समिति
श्री श्यामानंद जालान
उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी
श्रीमती परवीन सुल्ताना
डॉ. (श्रीमती) शन्नो खुराना
डॉ. (श्रीमती) सरयु कालेकर
डॉ. एस. राजाराम
श्री भास्कर चन्दावरकर
डॉ. (श्रीमती) हेलेन गिरि
श्री जयंत कस्तुआर
सचिव, संगीत नाटक अकादेमी (पदेन)

नृत्य की सलाहकार समिति
श्री श्यामानंद जालान
उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी
श्रीमती सोनल मानसिंह
श्रीमती शांता सर्बजीत सिंह
श्रीमती चित्रा विश्वेश्वरण
श्रीमती प्रतिभा प्रहलाद
श्री अस्ताद देबू
पं. बिरजू महाराज
श्री जयंत कस्तुआर
सचिव, संगीत नाटक अकादेमी (पदेन)

रंगमंच की सलाहकार समिति
श्री श्यामानंद जालान
उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी
श्रीमती अमाल अल्लाना
डॉ. चंद्रशेखर कंबार
श्री दुलाल रॉय
श्री सतीश आलेकर
श्री बलवंत ठाकुर
श्री रतन थियम
श्री जयंत कस्तुआर
सचिव, संगीत नाटक अकादेमी (पदेन)

प्रलेखन और अभिलेखागार सलाहकार समिति
श्री श्यामानंद जालान
उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी
डॉ. (श्रीमती) हेलेन गिरि
श्री सुनील कोठारी
श्रीमती सोनल मानसिंह
सुश्री अनिता रत्नम
श्री एस. सरकार
महानिदेशक, राष्ट्रीय अभिलेखागार
श्री कपिल तिवारी
श्री जयंत कस्तुआर
सचिव, संगीत नाटक अकादेमी (पदेन)

वित्त समिति
श्री श्यामानंद जालान
उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी
श्री वी. सुब्रह्मणियन
वित्तीय सलाहाकर (संस्कृति विभाग)
श्री के. जयकुमार
संयुक्त सचिव (संस्कृति विभाग)
श्री प्रेम मटियानी
निदेशक, गीत एवं नाटक प्रभाग
श्रीमती सोनल मानसिंह
श्री जयंत कस्तुआर
सचिव, संगीत नाटक अकादेमी (पदेन)

वर्ष 2002-2003 के दौरान आयोजित बैठकें

परिशिष्ट-III

कार्यकारिणी मंडल	18-19 जून 2002
युवा रंगकर्मी कार्यशाला के निर्देशकों की बैठक	29 जुलाई, 2002
सलाहकार समिति नाटक	30-31 जुलाई 2002
वित्त समिति	2 अगस्त 2002
सत्रिय नृत्य समिति	19 अगस्त, 2002
सलाहकार समिति (संगीत)	20 अगस्त ,2002
अनुदान समिति	21-22 अगस्त, 2002
उत्तर क्षेत्र के बृहद्‌देशी उत्सव की समिति	11 सितम्बर 2002
प्रकाशन समिति	23 सितम्बर 2002
सलाहकार समिति (नृत्य)	25 सितम्बर, 2002
कार्यकारिणी मंडल	21-22 अक्तूबर 2002
आइ एस सी ई पी के अन्तर्गत राज्यों/ संघ राज्यों के प्रतिनिधियों का वार्षिक सम्मेलन	22 नवम्बर 2002
कलाओं में राष्ट्रीय स्तर पर अध्येतावृति के तहत नृत्य, संगीत और नाटक की सलाहकार समिति की बैठक	17-18 फरवरी 2003
वित्त समिति	4 मार्च 2003
कार्यकारिणी मंडल	24 मार्च 2003
महापरिषद	25 मार्च 2003